International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(2): 125-126

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(2): 125-126
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-01-2019
Accepted: 20-02-2019

Dr. Sangeeta Singh
Assistant Professor,
K. D. S. Mahavidyalaya
Subaspur Pali, Jaunpur,
Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Sangeeta Singh
Assistant Professor,
K. D. S. Mahavidyalaya
Subaspur Pali, Jaunpur,
Uttar Pradesh, India

बौद्ध दर्शन का प्रत्यक्ष सिद्धान्त

Dr. Sangeeta Singh

प्रस्तावना

बौद्ध दर्शन का स्पष्ट स्परूप बुद्धोत्तर बौद्ध दर्शन में प्रमाणित होता है बुद्ध के परिनिर्माण के पश्चात् बौद्ध दर्शन विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त हो गया बुद्ध ज्ञान मीमांसा प्रश्नों को अत्याकृत प्रश्न कहते थे। वे इसके कारण उनके ऊपर समय–समय पर संशयबाद अज्ञेयवाद, रह स्यवाद और अतिन्द्रियवाद के आरोप भी लगाये गये। उनके अनुसार चार आर्य सत्तो का अनुशीलन ही व्यीक्त के लिए उपयोगी एवं सार्थन है।

बुद्ध का यह आग्रह था कि किसी व्यक्ति को मेरे विधान को मुझसे भक्ति रखने के कारण ही नहीं स्वीकार करना चाहिए अवितु पहले सोने की भाँति आग में तयाकर उसकी परीक्षा करनी चाहिए। बुद्ध की मृत्यु के बाद ही विश्वासों एवं क्रियाओं में भेद प्रकट होने लेगे थे बैशाली की द्वितीय बौद्ध महासंगीत में सिद्धान्त सम्बन्धी विवाद के कारण ही बौद्ध धर्म 'स्थरिवाद' और महासांधिक दो सम्प्रदाओं में बॉट गया जो कालान्तर में क्रमशः 'हीनयान' एवं 'महायान' के नाम से प्रसिद्ध हुए। कालान्तर में पारस्परिक विवादों के कारण स्थरिवादियों के बारह महसंधियों के छः सम्प्रदाय अर्थात् बौद्ध दर्शन के कुल अभरह सम्प्रदाय हो गये। परन्तु इनमें से केवल चार सम्प्रदाय ही जीविता रह सके, अन्य सभी सम्प्रदाय लुप्त हो गये।

इनमें चार प्रधान–प्रधान शाखाओं का उल्लेख भारतीय दर्शनों में किया जाता है। जो इस प्रकार है :– चार शाखाओं के अन्तग्रत जो बौद्ध दार्शनिक है उनमें कुछ (1) शून्यवादी या माध्यमिक है, कुछ (2) विज्ञज्ञनवादी या गोचर है कुछ (3) बाह्यनुमेयवादी या सौत्रांमिक है तथा कुछ (4) ब्राह्यप्रतयक्षवादी या वैभाषिक है, शून्यवाद तथा विज्ञानवाद महायान सम्प्रदाय के अर्न्तगत् है और ब्राह्यनुमेयवाद तथा ब्राह्य–प्रत्यक्षवाद हनियादन के अन्तर्गत है। यहाँ इस बात का स्मरण रखना आवश्यक है कि महायान तथा हीनयान के अर्न्तगत् और भी अनेक शाखाएं। [1]

हम इन चार मतो का यहाँ पृथक–पृथक विचार करेंगे :–

शून्यवाद

शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन थे दूसरी शताब्दी में दक्षिण भारत के एक ब्राह्यमण परिवार में इनका जन्म हुआ था। बुद्ध चरित के प्रणेता अश्वघोष भी शून्यवाद के समर्थक थे। नागार्जुन की मूल माध्यमिक कारिका ही इस मत की आधार शिला है। आर्यदेव की चतुः शतिका भी एक और प्रधान ग्रन्थ हैं।

भारत वर्ष में बौद्धेतर दार्शनिक शून्यवाद से यह समझते हैं कि संसार शून्यमय है अर्थात् किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं है।

जब हम किसी रस्सी को साँप समझ लेते हैं तो वहाँ का अस्तित्व बिल्कुल असतय है। ज्ञान वस्तु (अर्थात् साँप) यदि असत्य हे तो ज्ञाता तथा ज्ञान भी असत्य है। अतः इस दृष्टान्त के द्वारा यह प्रतीत होता है कि स्वप्न जगत की तरह ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय सभी असत्य है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आभ्यांतर या बाह्रय किसी प्रकार की सत्ता नही है। संसार बिल्कुल शून्य है।

योगाचार विज्ञानवाद

विज्ञानवाद के अनुसार चित्त ही एक मात्र सत्ता है। विज्ञान के प्रवाह को ही चित्त कहते है। धर्म कीर्ति कहते है कि नीले रंग में तथा नीले रंग के ज्ञान में कोई भेद नहीं है। क्योंकि दोनों का प्रथक अस्तित्व नहीं है।

यह किसी तरह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि ज्ञान से भिन्न वस्तु का कोई अस्तित्व भी है। योगाचार के इस मत को विज्ञानवाद कहते हैं।

सौत्रांतिक बाह्ययानुमेयवाद

सौत्रांतिक, चित्त तथा बाह्य जगत् दोनों को ही मानते है। उनका कथन है कि यदि बाह्य वस्तुओं के अस्तित्व को नहीं माना जाएं, तो बाह्य वस्तुओं की प्रतीत कैसे होती है– इसका प्रतिपाद हम नहीं कर सकते हैं।

बाह्य वस्तु के सद्रश यह कहना उसी तरह अर्थहीन हो जिस तरह बध्यापुत्र।

सौत्रांतिको के अनुसार (1) आलम्बन (2) समनंतर (3) अधिपति और (4) सहकारी प्रत्यय है।

1. घटादि बाह्य विषय ज्ञान का आलम्बन है। क्योंकि ज्ञान का आकार उसी से उत्पन्न होता है।
2. ज्ञान के अव्यवाहिल पूर्ववर्ती मानसिक अवस्था से ज्ञान में चेतना आती है। इसलिए इसका नाम समनंतर प्रत्यय है।

इस मत को सौत्रांतिक कहते है कि सूत्र पिटक ही इसका मुख्य आधार है कहा जाता है कि कुमारीलभट्ट इस मत के प्रतिष्ठाता है इनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।

वैभाषिक सम्प्रदाय :– सौत्रांतिक की तरह वैभाविक भी चित्त तथा बाह्य वस्तु के अस्तित्व को मानत हैं किन्तु आधुनिक नत्य वस्तुवादियों ;छमवतमंसपेजेद्ध तरह ये कहते है। कि वस्तुओं का ज्ञान प्रत्यक्ष को छोड़कर अन्य किसी उपाय से नही हो सकता। जैसे–धुँआ देखकर हम आग का अनुमान करते हैं किन्तु यह इसलिए सम्भव होता है कि अतीत में हमने आग और धुओं एक साथ देखा है। यदि बाह्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष कभी नही हुआ रहे तो केवल मानसिक परिरूपों के आधार पर उनका अस्तित्व सिद्ध नहीं होता सकता।

इस मत की उत्पत्ति मुख्मतः कश्मीर में हुई थी। अधिधर्म पर महाविभाषा या विभावा नाम एक प्रकाड़ टीका इस मत का मूल अवलंबन थी, इसलिए इसका नाम वैभाषिक पड़ा।

बौद्ध धर्म के धार्मिक सम्प्रदाय

1. हीनयान में बौद्ध धर्म को प्राचीन रूप पाया जाता है। यह जैन धर्म की तरह अनीश्वरवादी है। इसमें ईश्वर के बदले 'कम्म' तथा 'धम्म' को माना जाता है संसार का परिचालन इसी धम्म के द्वारा होता है। स्वयं महात्मा बुद्ध न कहा था– 'आत्मदीपोभव' उसकी यह उक्ति ही मानों हीनयान का मूलमंत्र है। [1]
2. महायान बड़ी गाड़ी या बड़ा पथ है। इसके द्वारा अनेक व्यक्ति जीवन के लक्ष्य स्थान तक पहुँच सकते हैं। नये सम्प्रदाय का नाम महायान है।

बौद्ध दर्शन की उपरोक्त वर्णित चार शाखाओं के संक्षिप्त विवेचन से बौद्ध दर्शन के बारे में हम जान सकते है।

सन्दर्भ सूची

1. ब्रम्हम सूत्र – शंकराचार्य
2. अद्वैत सिद्वान्त – मधुसूधन सरस्वती
3. भारतीय दर्शन – आचार्य बलदेव उपाध्याय
4. रत्न प्रभाव टीका – शंकराचार्य
5. भारतीय दर्शन – देवराज नन्दकिशोर
6. श्रीमद भागवत गीता – श्री हरिकृष्णदास गोयन्दका
7. सर्वदर्शन संग्रह – माध्वाचार्य
8. बौद्व दर्शन और वेदान्त – सी०डी० शर्मा
9. भारतीय दर्शन की रूपरेखा – संगम लाल पाण्डेय
10. भारतीय दर्शन की समस्याओं और समकालीन दर्शन – डॉ० बद्रीनाथ सिंह
11. रत्नावली – नागार्जुन
12. चतुः शतक – आर्यदेव
13. योगाचार भूमिशास्त्र – असड़ग
14. प्रमाण वार्तिक – धर्मकीर्ति
15. वैशेषिक सूत्र – कणाद
16. तत्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा – केदार नाथ तिवारी
17. Six ways of knowing - D.M. Dutt
18. Brahma – Sutra - S. Radhakrishanan
19. Acritical Survey of Indian philosophy - C.D. Sharma
20. Hinduism and Buddhism - A. Coomarswany